गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण ८

दो सप्ताह पहले एक किशोर आश्रम आया था। आज प्रातः उसके पिता अपने पुत्र के आश्रमकालीन अनुभव सुना रहे थे। उन्होंने बताया कि जब उनका पुत्र घर वापस आया तो पूरी तरह से बदल चुका था, इस हद तक कि उसके पिता को विश्वास ही नहीं हो रहा था। लड़के ने कहा, "पिता जी, मुझे आश्रम की पत्ती-पत्ती में भगवान के दर्शन हो रहे थे।" वह अत्यधिक द्रवित था। वास्तव में, मुझे वह समय याद है जब वह लड़का किशोरों के ध्यान-शिविर के पश्चात् दर्शन के लिए आया था तो उसने कहा था, "गुरुमाई जी, इतने सालों तक मैंने अपने माता-पिता के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया है, मैंने उनके प्रेम को कभी समझा ही नहीं। इन सबके लिए क्या आप मुझे क्षमा करेंगी? मैं सचमुच चाहता हूँ कि मुझे क्षमा मिले। मैं सचमुच ऐसा चाहता हूँ।"

मैंने उस किशोर को एक व्यक्ति-विशेष के पास बात करने के लिए भेजा। इस व्यक्ति ने उस लड़के को राय दी कि वह अपने माता-पिता को तुरन्त फ़ोन करे और उन्हें बताए कि इस समय उसके हृदय में कैसे भाव उठ रहे हैं। उसने बिलकुल ऐसा ही किया। उसने अपने माता-पिता से फ़ोन पर कहा, "मैंने उनसे क्षमा-याचना की है। मैं गुरुमाई के पास गया था," और उसने सारी बात उन्हें बताई।

उसके माता-पिता का हृदय भर आया। बाद में, जब उसके पिता गर्मियों में यहाँ आए तो वे हर समय अपने पुत्र की ही बात करते रहते थे। जितनी बार भी वे मुझे दिखाई देते, फिर से अपने पुत्र की कहानी सुनाने लगते। "मेरा बेटा! मेरा बेटा। मैंने उसकी आँखों में रूपान्तरण के आँसू देखे। मैंने उसकी आवाज़ को बदलते हुए सुना। मेरे बेटे ने एक-एक पत्ती में भगवान को देखा।"

मैं सिर हिलाती रही। "हाँ, हाँ।" यह सचमुच अद्भुत था। जब तुम किसी को रूपान्तरण का अनुभव बताते हुए सुनते हो तो तुम्हारा हृदय बहुत द्रवित हो जाता है। हर बार जब तुम सोचते हो कि तुमने यह बात बहुत सुन ली, तभी वह तुम्हारे अन्दर किसी दूसरे ही भाग को छू जाती है। जिस तरह से वह

व्यक्ति इसे कहता है, जिस तरह से वह बात तुम्हें प्रभावित करती है, उससे तुम्हें अनुभव होता है, “अरे, अभी और भी कुछ है. . .” करुणा। जब तुम परस्पर करुणा के भाव की अनुभूति करते हो तो तुम एक-दूसरे में भगवान को देख पाते हो।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय ७ “करुणा,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. ११०-१११।